

बून्दनि बहार (१८७)

देखो झूलें हिण्डोले साईं सुकुमार॥

सांवन की तीज सुहावन आई बरसे बून्दनि बहार॥

हरियाली चहूं दिशि है छाई जंह तंह भई गुलज़ार॥

फुल हिण्डोले में गोद युगल वर झूले मैगसि मनठार॥

वृन्दावन के सघन निकुंज में झूले की मौज अपार॥

साईं झूले मैया झुलावें दास बोलिनि जैकार॥

सुख निवास में फूली फुलवाड़ी भंवरनि मधुर गुंजार॥

चिरु जीवे मेरी मैगसि मैया सति संगति सींगार॥

सुर नर मुनि मिल फूल बरसावत गावत मंगलाचार॥